नईदुनिया

चेन्नई के अलावा ज्यादातर सर्राफा बाजार में सस्ता हुआ सोना, चांदी के भाव में बदलाव नहीं

नई दिल्ली

घरेलू सर्राफा बाजार में शुरुआती कारोबार के दौरान चेन्नई के अलावा ज्यादातर दूसरे सर्राफा बाजार में गिरावट का रुख बना हुआ है। दूसरी ओर चेन्नई में सोने के भाव में मामूली तेजी दर्ज की गई है। वहीं चांदी के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ है। सोने की कीमत में बदलाव होने के कारण चेन्नई के अलावा देश के दूसरे सर्राफा बाजार में सोना 1,300 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 1,400 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हो गया है। वहीं चेन्नई में सोना 150 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 170 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो गया है।

कीमत में हुए इस परिवर्तन की वजह से देश के ज्यादातर सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 1,53,170 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 1,54,740 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 1,40,390 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 1,41,840 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में बदलाव नहीं होने के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में भी 2,49,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बिक रही है।

दिल्ली में 24 कैरेट सोना 1,53,320 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 1,40,540 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 1,53,170 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,40,390 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 1,53,220 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 1,40,440 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना 1,54,740 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 1,41,840 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में 24 कैरेट सोना 1,53,170 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,40,390 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। भोपाल में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,53,220 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,40,440 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

जयपुर में 24 कैरेट सोना 1,53,320 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,40,540 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,53,220 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,40,440 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 1,53,320 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 1,40,540 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी सोना शुरुआती कारोबार के दौरान कमजोरी के साथ कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना 1,53,170 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

न्यूज ब्रीफ

चाहकर भी कोई सरकार कृषि उत्पादों की कीमतें तय नहीं कर सकती, चीनी की कीमतों में उतार-चढ़ाव को लेकर गडकरी ने साफ कर दिया

नई दिल्ली। देश में चीनी की कीमतों में उतार-चढ़ाव और चीनी उद्योग द्वारा मिनिमम सपोर्ट प्राइस बढ़ाने की मांग के बीच केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने स्पष्ट कर दिया है कि सरकार चीनी या अन्य कृषि उत्पादों के दाम तय नहीं कर सकती। गडकरी ने कहा कि वर्तमान में हम एक वैश्विक अर्थव्यवस्था में हैं, जहां चाहकर भी कोई सरकार कृषि उत्पादों की कीमतें तय नहीं कर सकती। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि चीनी के दाम ब्राजील, मक्के के दाम अमेरिका और पाम आयल की कीमतें मलेशिया में तय होती हैं। उन्होंने कहा कि विपक्ष में रहते हुए किसानों के लिए ऐसी मांगों को उठाना आसान होता है, लेकिन सत्ता में रहने पर इन्हें व्यावहारिक रूप से लागू करने में कठिनाइयां होती हैं। वैश्विक बाजार का गणित समझाते हुए उन्होंने बताया कि ब्राजील में 2,000 से 3,000 एकड़ के बड़े फार्म हैं और वहां आधुनिक मशीनों का इस्तेमाल होता है। इस वजह से ब्राजील में चीनी बनाने की लागत महज 23 रुपए प्रति किलो आती है, जबकि भारत में यह लागत 33 से 34 रुपए प्रति किलो पड़ती है। ब्राजील में अतिरिक्त स्टाक उपलब्ध होते ही भारत में कीमतें अपने आप गिर जाती हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक गडकरी ने चीनी उद्योग और किसानों को केवल चीनी बिक्री पर निर्भर न रहने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए गन्ने के अन्य सह-उत्पादों का इस्तेमाल करना जरूरी है। इसके लिए उन्होंने गन्ने के कचरे, बायोमास आधारित उत्पादों और जैविक खाद के उत्पादन पर ध्यान देने को कहा, जिससे चीनी मिलों और किसानों दोनों को अतिरिक्त आय मिल सके।

दिल्ली में अब बिना वैध सर्टिफिकेट वाहन में नहीं भरी जाएगी सीएनजी, सुरक्षा के मद्देनजर आईजीएल ने शुरू किया वेरिफिकेशन सिस्टम

नई दिल्ली। दिल्ली में इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड (आईजीएल) ने कई सीएनजी स्टेशनों पर एक आटोमेटेड व्हीकल वेरिफिकेशन सिस्टम शुरू किया है, जिसके बाद अब बिना ज्यादा जांच के सीएनजी भरवाना मुश्किल हो सकता है। यह नया सिस्टम तय करेगा कि आपकी गाड़ी में सीएनजी तभी भरी जाए जब आपके सीएनजी सिलेंडर का हाइड्रो-टेस्ट सर्टिफिकेट वैध हो। इस नए सिस्टम के तहत जब कोई वाहन चालक सीएनजी भरवाने पंप पर जाएगा, तो पहले की तरह सीधे सीएनजी नहीं भरी जाएगी। रिपोर्ट के मुताबिक सीएनजी स्टेशन पर लगे कैमरे गाड़ी की नंबर प्लेट स्कैन करेंगे और सिस्टम सीएनजी सिलेंडर से जुड़ी जानकारी की जांच करेगा। यदि सिलेंडर का हाइड्रो-टेस्ट सर्टिफिकेट वैध नहीं पाया जाता है, तो वाहन चालक की गाड़ी में सीएनजी नहीं भरी जाएगी। आईजीएल ने फिलहाल 10 स्टेशनों पर यह आटोमेटेड व्हीकल वेरिफिकेशन सिस्टम शुरू किया है। इस कदम का मुख्य उद्देश्य गैस लीकेज और ब्लास्ट जैसे खतरों को रोकना और सुरक्षा तय करना है।

अगस्त में भारतीय इक्विटी बाजार में दबाव, सिर्फ आईपीओ और डिफेंस ने दिखाया दम

नई दिल्ली। अगस्त का महीना भारतीय घरेलू इक्विटी बाजार के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण साबित हुआ। वेलम कैपिटल की नवीनतम मंथली मैक्रो ग्रिड चार्टबुक के अनुसार व्यापक बाजार पर चौतरफा दबाव देखने को मिला, जहां 23 में से सिर्फ आईपीओ और डिफेंस थीम ही सकारात्मक रिटर्न देने में सफल रहीं। निवेशकों ने जोखिम से दूरी बनाई, जिसके चलते इक्विटी फंड से बड़े पैमाने पर निकासी भी हुई। एक रिपोर्ट के मुताबिक, अगस्त में कुल 23 थीम में से केवल आईपीओ थीम ने 2.2 फीसदी और डिफेंस सेक्टर ने 1.4 फीसदी की बढ़त दर्ज की। इसके विपरीत आटो और रेलवे थीम सबसे कमजोर रहीं, जिनमें क्रमशः 6.5 फीसदी और 6.4 फीसदी की गिरावट आई। टेक्नोलाजी सेक्टर में भी 6.1 फीसदी की कमी देखी गई। हालांकि, टेक-स्पेस में एक विरोधाभासी प्रवृत्ति दिखी, जहां इंटरनेट और डिजिटल थीम 3.2 फीसदी बढ़ी, जबकि आईटी इंडेक्स में 9.1 फीसदी की तेज गिरावट दर्ज की गई, जो निवेशकों की चुनिंदा निवेश रणनीति को दर्शाता है।

अर्बन क्रूजर टैसर को टोयोटा नए अवतार में करेगी लान्च

नई दिल्ली

जल्द ही अपनी पापुलर काम्पैक्ट एसयूवी अर्बन क्रूजर टैसर को टोयोटा नए अवतार में लान्च करने की तैयारी कर रही है। इस नई कार में सिर्फ लुक्स ही नहीं बदलेंगे, बल्कि इंजन, सेफ्टी और फीचर्स के मामले में भी कई बड़े अपडेट देखने को मिलेंगे। टैसर मारुति सुजुकी फ्रोंक्स पर ही आधारित माडल है, और फ्रोंक्स फेसलिफ्ट के ठीक बाद टोयोटा भी अपनी टैसर का फेसलिफ्ट माडल बाजार में उतारेगी। इस नई टैसर का सबसे बड़ा बदलाव इसके बोनट के नीचे देखने को मिलेगा, जहां कंपनी मौजूदा 1.2-लीटर 4-सिलेंडर पेट्रोल इंजन को हटाकर नया 1.2-लीटर 3-सिलेंडर-सीरीज इंजन दे सकती है।

यह नया इंजन खासकर शहर के ट्रैफिक में बेहतर ड्राइविंग और शानदार माइलेज के लिए डिजाइन किया गया है, जबकि 1.0-लीटर बूस्टरजेट टर्बो-पेट्रोल इंजन का विकल्प पहले की तरह ही मिलता रहेगा। लुक की बात करें तो, फेसलिफ्ट माडल में आगे का हिस्सा काफी बदला हुआ नजर आएगा, जिसमें टोयोटा की सिग्नेचर फ्रंट ग्रिल को नया डिजाइन मिलेगा, और साथ ही एलईडी डीआरएल व बम्पर को भी स्पार्टी लुक दिया जाएगा। कार के अंदर बैठते ही केबिन पहले से ज्यादा प्रीमियम और आरामदायक महसूस होगा, जहां डैशबोर्ड के लेआउट में कुछ छोटे-मोटे सुधार किए जाएंगे और नए कलर थीम के साथ बेहतर क्वालिटी वाले साफ्ट-टच मटेरियल का इस्तेमाल होगा। इसके अलावा, गर्मी के मौसम को ध्यान में रखते हुए इस बार नई टैसर में आगे की सीटों के लिए वेंटिलेटेड सीट्स का फीचर भी दिया जा सकता है।

गाड़ी के इंफोटेनमेंट और टेक फीचर्स को भी नया अपडेट मिल रहा है। इसमें पहले से बड़े साइज की टचस्क्रीन दी जाएगी, जो वायरलेस एप्पल कारप्ले और एंड्राइड आटो को सपोर्ट करेगी। इसके साथ ही, टाप वैरिएंट्स में एनालाग सुइयों वाले मीटर की जगह पूरी तरह से डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया जा सकता है, जिससे गाड़ी का इंटीरियर एकदम माडर्न लगेगा। सुरक्षा के मामले में भी नया माडल काफी आगे रहने वाला है। अब इसमें सभी वैरिएंट्स में 6 एयरबैग्स स्टैंडर्ड मिलेंगे। साथ ही 360-डिग्री कैमरा और ब्लाइंड-स्पाट मानिटरिंग जैसे फीचर्स भी शामिल होंगे।

18.34 लाख के स्टाइपेंड पर नहीं लगेगा टैक्स! मेडिकल छात्रा को आईटीएटी से बड़ी राहत, आईटीएटी ने कहा, यह रकम इनकम टैक्स एक्ट, 1961 की धारा 10(16) के तहत टैक्स मुक्त है

नई दिल्ली। सालों की मेहनत के बाद मेडिकल की पढ़ाई कर रही एक छात्रा के लिए स्टाइपेंड पर टैक्स का झटका लगना अप्रत्याशित था लेकिन अब दिल्ली आयकर अपीलीय ट्रिब्यूनल (आईटीएटी) ने इस मामले में एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। ट्रिब्यूनल ने एक मेडिकल छात्रा को पोस्टग्रेजुएट पढ़ाई और अनिवार्य रेजिडेंसी ट्रेनिंग के लिए मिले 18.34 लाख रुपये के स्टाइपेंड को सैलरी मानने के आयकर विभाग के फैसले को रद्द कर दिया है। आईटीएटी ने साफ किया कि यह रकम इनकम टैक्स एक्ट, 1961 की धारा 10(16) के तहत टैक्स मुक्त है, क्योंकि इसका सीधा संबंध उसकी शिक्षा से था। 18.34 लाख रुपए का स्टाइपेंड कैसे बना टैक्स विवाद मामला हरियाणा के रेवाड़ी की रहने वाली एक छात्रा का है। संबंधित वित्त वर्ष में वह अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से फुल-टाइम एमएस (जनरल सर्जरी) कोर्स कर रही थीं। इस दौरान उन्हें अपनी पोस्टग्रेजुएट मेडिकल पढ़ाई और जरूरी रेजिडेंसी ट्रेनिंग के लिए 18,34,578 रुपये का स्टाइपेंड मिला। छात्रा ने इस राशि को आयकर अधिनियम की धारा 10(16) के तहत टैक्स से छूट देने की मांग की, जो पढ़ाई के खर्च के लिए मिलने वाली स्कालरशिप पर लागू होती है। हालांकि, टैक्स आफिसर ने उनकी दलील नहीं मानी और इस पूरी रकम को सैलरी से होने वाली आय मानकर उस पर टैक्स जोड़ दिया। यह मामला कमिश्नर आफ इनकम टैक्स (अपील्स) तक पहुंचा, जहां भी स्टाइपेंड को आय में जोड़ने का फैसला बरकरार रखा गया। इसके बाद स्नेहलता ने दिल्ली आईटीएटी का रुख किया। आईटीएटी ने क्या पाया और क्यों मिली राहत दिल्ली आईटीएटी ने मामले की गहन जांच की। ट्रिब्यूनल ने पाया कि छात्रा एक एमबीबीएस डाक्टर हैं और फुल-टाइम एमएस कोर्स कर रही थीं, जिसमें रेजिडेंसी ट्रेनिंग एक अनिवार्य हिस्सा है। यानी, उन्हें मिला स्टाइपेंड उनकी पोस्टग्रेजुएट मेडिकल पढ़ाई और ट्रेनिंग से सीधे जुड़ा था। आईटीएटी ने स्पष्ट किया कि स्टाइपेंड का असली मकसद उनकी शिक्षा को सहायता देना था, न कि किसी सेवा के बदले वेतन। ट्रिब्यूनल ने चंडीगढ़ आईटीएटी के हितेशी अग्रवाल बनाम पीसीआईटी के एक पुराने फैसले का भी हवाला दिया ।

फिच ने वित्त वर्ष 2026-27 की जीडीपी वृद्धि का अनुमान बढ़ाकर 6.9 फीसदी किया

नई दिल्ली

मूडीज के बाद रेटिंग एजेंसी फिच रेटिंग्स ने भी चालू वित्त वर्ष 2026-27 के लिए भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर के अनुमान को 6.4 फीसदी से बढ़ाकर 6.9 फीसदी कर दिया है। रेटिंग एजेंसी ने (अप्रैल-जून) पहली तिमाही में मजबूत आर्थिक वृद्धि दर के साथ अर्थव्यवस्था की समग्र मजबूती का हवाला दिया है। फिच ने कहा कि चालू वित्त वर्ष 2026-27 में कुल जीडीपी वृद्धि 6.9 फीसदी रहेगी, जो जून में लगाए गए उसके 6.4 फीसदी के अनुमान से अधिक है।

फिच ने कहा कि अप्रैल-जून तिमाही में 7.8 फीसदी की वृद्धि दर यह दर्शाती है कि 2026 की पहली छमाही में व्यापार शर्तों में आई बड़ी गिरावट के बावजूद अमेरिकी-ईरान युद्ध से लगे झटके के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था ने मजबूती दिखाई है।

रेटिंग एजेंसी फिच ने कहा कि निजी निवेश की संभावनाएं अधिक मजबूत दिख रही हैं और हमें उम्मीद है कि निवेश में 10 फीसदी से अधिक की वृद्धि होगी। गैर-खाद्य ऋण की वृद्धि दर जुलाई में सालाना आधार पर 19 फीसदी रही। फिच के अनुसार शेष वित्त वर्ष में भारत की आर्थिक वृद्धि की गति धीमी पड़ने की संभावना है।

फिच ने कहा कि मजबूत मांग, कीमतों में वृद्धि और प्रतिकूल आपूर्ति संबंधी घटनाक्रमों को देखते हुए हमारा अनुमान है कि रिजर्व बैंक आफ इंडिया (आरबीआई) अक्टूबर की मौद्रिक नीति समीति की समीक्षा बैठक में रेपो रेट में 0.25 फीसदी तक बढ़ोतरी कर इसे 5.5 फीसदी कर देगा। देश की अर्थव्यवस्था पिछले वित्त वर्ष 2025-26 में 7.8 फीसदी की दर से बढ़ी थी, जबकि वित्त वर्ष 2026-27 की अप्रैल-जून तिमाही में 7.8 फीसदी की वृद्धि दर से बढ़ा है। पिछले हफ्ते मूडीज रेटिंग्स ने भी भारत की आर्थिक वृद्धि दर अनुमान को छह फीसदी से बढ़ाकर सात फीसदी कर दिया था।

यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो: 72 देशों से 600 खरीदार, चमकेगी यूपी की ग्लोबल इमेज

लखनऊ। उत्तर प्रदेश को एक ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य को गति देने के लिए यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो का चौथा संस्करण वैश्विक मंच पर अपनी छाप छोड़ने को तैयार है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में तैयारियों की समीक्षा की और अधिकारियों को समय पर सभी व्यवस्थाएं पूरी करने के निर्देश दिए। इस बार जापान, वियतनाम, रूस, सिंगापुर, आस्ट्रिया और बेलारूस सहित छह देश भागीदार होंगे, जबकि 72 देशों और केंद्र शासित प्रदेशों से लगभग 600 अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के शामिल होने की उम्मीद है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जोर दिया कि यह ट्रेड शो वोकल फार लोकल और मेक इन इंडिया अभियान को भी बढ़ावा देगा। आयोजन से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक, भागीदार देशों के लिए विशेष पवेलियन बनाए जाएंगे, जहां कारोबारी सत्र और कंपनियों के बीच सीधी बैठकें आयोजित होंगी। भारतीय निर्यात संगठनों के महासंघ और विदेशों में भारतीय मिशनों की मदद से अंतरराष्ट्रीय खरीदारों को ट्रेड शो से जोड़ा जा रहा है।

आरएंडडी निवेश में भारतीय कंपनियों ने पकड़ी रफ्तार, वैश्विक दिग्गजों से है काफी पीछे

नई दिल्ली

भारत में अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) निवेश में भारतीय कंपनियों ने हाल के वर्षों में गति पकड़ी है, लेकिन वे अभी भी वैश्विक दिग्गजों की तुलना में काफी पीछे हैं। वर्ष 1991 के आर्थिक सुधारों का मूल उद्देश्य भुगतान संकट को दूर करना था, जो विदेशी मुद्रा के खर्च और कमाई के बीच बढ़ते अंतर का परिणाम था। पिछले 20 सालों में से 18 में भारत को व्यापार घाटे का सामना करना पड़ा है, जिससे चालू खाते और विदेशी मुद्रा भंडार पर लगातार दबाव बना रहा है। यह न केवल वृहद आर्थिक असफलता थी, बल्कि भारतीय व्यवसायों की वैश्विक बाजार में अपने उत्पादों के लिए जगह बनाने में नाकामी भी थी।

रिपोर्ट के मुताबिक 1989-90 में देश की जीडीपी में वस्तुओं के निर्यात का हिस्सा केवल 6.7 फीसदी था, जबकि आयात पर खर्च जीडीपी का 8.9 फीसदी था। 1991 तक भारतीय कंपनियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा की अधिक चिंता नहीं थी, क्योंकि औद्योगिक लाइसेंसिंग और सरकारी नियंत्रण ने उन्हें घरेलू बाजार में उपभोक्ताओं पर मजबूत पकड़ दी थी। उच्च शुल्कों की सुरक्षा के बीच उनका ध्यान घरेलू बिक्री बढ़ाने पर था और निर्यात प्राथमिकता में नहीं था। तत्कालीन वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने जुलाई 1991 में अपने पहले बजट में इन सुधारों के मुख्य उद्देश्य पर जोर दिया था। औद्योगिक उत्पादन की दक्षता और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना, ताकि प्रमुख क्षेत्र तेजी से बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था में तकनीकी और प्रतिस्पर्धी बढ़त हासिल कर सकें।

इसके लिए भारतीय कंपनियों को आरएंडडी में निवेश बढ़ाना जरूरी था, जो 1990 के दशक की शुरुआत में काफी कम था। सुधारों के बाद से आरएंडडी खर्च में बढ़ोतरी हुई है, खासकर वाहन, दवा और केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों जैसे क्षेत्रों का दबदबा रहा है। आरएंडडी खर्च के मामले में शीर्ष 10 कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज के अलावा चार दवा कंपनियां, तीन वाहन निर्माता और दो रक्षा उपकरण निर्माता कंपनियां शामिल थीं। बिज़नेस स्टैंडर्ड के नमूने में शामिल 1,450 गैर-बैंकिंग, वित्तीय सेवा एवं बीमा कंपनियों में से केवल 471 ने वित्त वर्ष 2026 में आरएंडडी पर खर्च का खुलासा किया और इनमें से भी केवल आधी कंपनियों ने अपनी शुद्ध बिक्री का 1 फीसदी या उससे अधिक हिस्सा आरएंडडी पर खर्च किया।

ग्लोबल मार्केट से मिले-जुले संकेत, एशिया में भी मिला-जुला कारोबार

नई दिल्ली

ग्लोबल मार्केट से मिले-जुले संकेत मिल रहे हैं। अमेरिकी बाजार पिछले सत्र के दौरान मिले-जुले परिणाम के साथ बंद हुए। हालांकि डाउ जान्स फ्यूचर्स मजबूती के साथ कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है। यूरोपीय बाजार में भी पिछले सत्र के दौरान मिला-जुला कारोबार होता रहा। इसी तरह एशियाई बाजार में भी मिला-जुला कारोबार हो रहा है।

अमेरिकी बाजार में पिछले सत्र के दौरान लगातार उतार चढ़ाव होता रहा। पूरे सत्र के कारोबार के बाद वाल स्ट्रीट के सूचकांक मिले-जुले परिणाम के साथ बंद हुए। डाउ जान्स इंडस्ट्रियल एवरेज 0.36 प्रतिशत लुढ़क कर 51,863.69 अंक के स्तर पर आ गया। वहीं एस एंड पी 500 इंडेक्स ने 0.06 अंक की सांकेतिक गिरावट के साथ 7,764.64 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। दूसरी ओर, माइक्रोन टेक्नोलाजी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जुड़े शेयरों में आई तेजी की वजह से नैस्डेक 122.18 अंक यानी 0.45 प्रतिशत की बढ़त के साथ 27,244.28 अंक के स्तर पर बंद हुआ। डाउ जान्स फ्यूचर्स भी फिलहाल 91.54 अंक यानी 0.18 प्रतिशत की मजबूती के साथ 51,955.23 अंक के स्तर पर कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है।

यूरोपीय बाजार भी पिछले सत्र के दौरान लगातार दबाव में कारोबार करने के बाद मिले-जुले परिणाम के साथ बंद हुए। एफटीएसई इंडेक्स 0.29 प्रतिशत टूट कर 10,708.33 अंक के स्तर पर बंद हुआ। दूसरी ओर, सीएसी इंडेक्स ने 0.20 प्रतिशत उछल कर 8,154.91 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसके अलावा डीएएक्स इंडेक्स 0.02 प्रतिशत की मामूली उछाल के साथ 25,578.85 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

एशियाई बाजार में भी मिला-जुला कारोबार हो रहा है। एशिया के नौ बाजार में से पांच के

सूचकांक मजबूती के साथ हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं, जबकि चार सूचकांक गिरावट के साथ लाल निशान में बने हुए हैं। गिफ्ट निफ्टी 0.04 प्रतिशत फिसल कर 23,389.50 अंक के स्तर पर आ गया है। इसी तरह स्ट्रेट्स टाइम्स इंडेक्स 0.11 प्रतिशत लुढ़क कर 5,720.09 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है।

हैंग सेंग इंडेक्स में बड़ी गिरावट नजर आ रही है। फिलहाल यह सूचकांक 192.75 अंक यानी 0.77 प्रतिशत टूट कर 24,895 अंक के स्तर पर आ गया है। वहीं शंघाई कंपोजिट इंडेक्स 0.36 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 3,938.08 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है।

दूसरी ओर, निक्केई इंडेक्स 882.70 अंक यानी 1.36 प्रतिशत की मजबूती के साथ 65,018.95 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह जकार्ता कंपोजिट इंडेक्स 0.67 प्रतिशत की तेजी के साथ 6,319.22 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है। इसके अलावा ताईवान वेटेड इंडेक्स 241.51 यानी 0.50 प्रतिशत उछल कर 48,041.32 अंक के स्तर पर, कोस्पी इंडेक्स 0.42 प्रतिशत की छलांग लगा कर 7,047.38 अंक के स्तर पर और सेट कंपोजिट इंडेक्स 0.01 प्रतिशत की सांकेतिक बढ़त के साथ 1,604.66 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहे हैं।